अध्याय 2

ताल के दस प्राण

संगीत को कालबद्धकरने के लिये ताल की ज़रूरत होती है। ताल को अनन्त असीम ''काल'' के द्वारा ही नापा जा सकता है। इसे नापने के लिये समय के अंग बनाने आवश्यक होते हैं। यह समय घंटा, मिनट, सेकण्ड में नापा जा सकता है।

जब ताल बन जाती है तो यह गीत को किस स्थान से ग्रहण करती है, उस स्थान को ''ग्रह'' कहते हैं। तालों को छोटा–बड़ा करने के लिये कुछ जातियाँ भी बनाई जाती है। ताल में ''लय'' का भी बड़ा स्थान होता है। एक मात्रा से दूसरी मात्रा तक जाने में जो समय लगता है उसे ''लय'' कहते हैं और यहीं लय ताल की गति निर्धारित करती है। ताल में एक–एक मात्रा के छोटे से छोटे अंश या ''कलाएँ'' क्या होती है उन्हें ताल में जानना भी ज़रूरी होता है। हमें यह जानना भी ज़रूरी होता है कि ताल में बोलों को किस ''गति'' से या किस ''यति'' या ''नियम'' या ''सिद्वांत'' से रखा जाय और फिर उनका ''प्रसार'' कैसे करें। यही ताल के दस प्राण होते हैं । क्रमानुसार ताल के दस प्राणों की व्याख्या निम्नानुसार प्रस्तुत है –

दक्षिणी ताल वाद्य – चेंड़ा

1. काल

समय का दूसरा नाम है ''काल''। काल के अनुसार ही मात्राओं की और ताल की रचना बनी है और इसी से ताल बनती है।

2. क्रिया

किसी भी ताल में मात्राओं को गिनने को क्रिया कहते हैं। ''खाली'' ''भरी'' दिखाना, हाथ से ताली लगाना, मात्राओं को गिनना इन सबको ''क्रिया'' कहते हैं। क्रिया से ही पता चलता है कि जो ताल बजायी जा रही है या जो ताल हाथों से लगा रहे हैं उस ताल में कौन–कौन से अंग हैं और वह कौनसी ताल है। क्रिया के दो प्रकार माने गये हैं – सशब्द क्रिया एवं निशब्द क्रिया । सशब्द क्रिया को पात भी कहते हैं और निशब्द क्रिया को खाली भी कहते हैं।

सशब्द (पात) क्रिया

सशब्द क्रिया वह क्रिया है जिसमें ताल की मात्रा या समय को गिनने के लिये आवाज़ उत्पन्न हो अर्थात ताली लगाकर मात्राएँ गीनी जायें।

निशब्द (खाली) क्रिया

ताल की मात्राओं को जब मन ही मन या ऊंगलियों पर गिना जाये जिसमें कोई ध्वनि उत्पन्न नहीं हो तो उसे निशब्द क्रिया कहते हैं।

3. कला

अक्षर काल को सूक्ष्म बांटना या विभाजित करने को कला कहते हैं। इस प्रकार या इसी आधार पर मात्रा के हिस्सों में बांटा जाता है। जैसे आधी मात्रा(½), पौन मात्रा (¾), चौथाई मात्रा (¼), मात्रा आदि और इसी को कला कहते हैं।

4. मार्ग

निश्चित काल से युक्त कलाओं के समूह को मार्ग कहा जाता है। विद्वानों ने मार्ग के चार प्रकार बतायें हैं अथवा वर्णित किये हैं। (1.) ध्रुव (2.) चतुरा (3.) दक्षिणा (4.) वृत्तिका। कला के अनुसार इन्हें अलग–अलग प्रकार से बांटा जाता था लेकिन इनका मूल स्वरूप क्या था इसका पता नहीं चलता था।

5. अंग

ताल के समय में जो अलग–अलग भाग होते हैं। उन्हें अंग कहा जाता है। अक्षर काल को स्पष्ट करने वाले चिन्हों को अंग कहा जाता है। अंग के 6 प्रकार होते हैं। (1.) अनुद्रुत (2.) द्रुत (3.) लघु (4.) गुरू (5.) प्लुत (6.) काक पद इनमें जो मात्राओं का समय माना गया है वो इस प्रकार है। ''अनुद्रुत'' : 1 मात्रा, ''द्रुत'':2 मात्रा, ''लघु'' : 4 मात्रा, ''गुरू'' : 8 मात्रा, ''प्लुत'' : 12 मात्रा, ''काकपद'' : 16 मात्रा ।

6. यति

लय के चाल क्रम को यति कहते हैं। प्राचीन विद्वानों ने शास्त्रों में पांच प्रकार के ''यति'' माने हैं।

(1) समा

गायन, वादन में लय के अन्तर्गत आरम्भ में, बीच में और अन्त में सभी स्थानों पर एक ही गति अर्थात समान गति की लय ही ''समा यति'' कहलाती है।

(2) स्त्रोतोगता

जिस संगीत में प्रारम्भ में विलंबित लय हो, बीच में मध्य लय हो और अन्त में द्रुत लय हो उसे ''स्त्रोतोगता'' यति कहते हैं।

(3) मृदंगा

जिसके आरम्भ में और अन्त में द्रुत लय हो तथा बीच में मध्य लय याविलंबित लय हो उसे ''मृदंगा'' यति कहते हैं।

(4) पिपीलिका

जिसके आदि और अन्त में विलंबित या मध्य लय हो और बीच में द्रुत लय हो उसे ''पिपीलिका'' यति कहते हैं।

(5) गोपुच्छा

जो यति द्रुत लय से शुरू होकर क्रमशः मध्य और फिर विलंबित लय में प्रवेश करे उसे ''गोपुच्छा'' यति कहते हैं।

7. प्रस्तार

जिस तरह सात स्वरों के फैलाव से 5040 तानें बन सकती है उसी प्रकार 1 मात्रा से लेकर 13 मात्राओं तक

के प्रस्तार अलग–अलग तालों की उत्पत्ति होकर उनकी संख्या 65535 हो सकती है। इस प्रकार भिन्न–भिन्न रूपों में की जाने वाली अंग–कल्पना को ''प्रस्तार'' कहते हैं।

8. जाति

जितने–जितने अक्षरों से जाति के बोलों की रचना हुई है उसी के अनुसार 5 जातियों की रचना की गई है या कायम की गई है जो इस प्रकार है –

(1.) त्रयश्र जाति	–	3	मात्राओं के लिये	तकिट
(2.) चतस्त्र जाति	–	4	मात्राओं के लिये	तक धिन
(3.) खंड जाति	–	5	मात्राओं के लिये	तकिट किट
(4.) मिश्र जाति	–	7	मात्राओं के लिये	तक धिन तकिट
(5.) संकीर्ण जाति	–	9	मात्राओं के लिये	तक धिन तक तकिट

9. ग्रह

ताल गति को किस स्थान से ग्रहण करना है इसको जानने के लिये 4 ग्रह बनाये गये हैं।

(1.) सम (2.) विषम (3.) अतीत (4.) अनागत

(1.) सम ग्रह : जब गीत और ताल एक ही स्थान से प्रारम्भ हो तो सम ग्रह कहते हैं।

(2.) विषम ग्रह : जब सम निकलने के बाद गायन, वादन प्रारम्भ किया जाये तो विषम ग्रह कहलायेगा।

(3.) अतीत : ताल के सम का अन्त होने पर जब गायन, वादन प्रारम्भ किया जाये तो उस स्थान को अतीत ग्रह कहते हैं।

(4.) अनागत ग्रह : जब पहले गायन, वादन शुरू हो जाये और बाद में ताल शुरू हो तो उसे अनागत ग्रह कहते हैं।

10. लय

एक मात्रा से दूसरी मात्रा और क्रमशः इसी प्रकार अन्य मात्राओं तक बजाने में जो समय लगता है उसे ही लय कहते हैं। जिस प्रकार चलते समय एक ही गति से चलते हैं, हमारा हृदय एक लय में धड़कता है, पृथ्वी की गति एक सी रहती है उसी प्रकार दो क्रियाओं के बीच लिया गया समय ही लय कहलाता है। मुख्य रूप से तीन प्रकार की लय मानी गई है –

(1.) मध्य लय

(2.) विलंबित लय और

(3.) द्रुत लय

इसके अलावा भी कई प्रकार की लय होती है। जैसे अति विलंबित लय, अति द्रुत लय, दोगुन, तिगुन, चौगुन, अठगुन, आड़ी, कुआड़ी, बिआड़ी आदि आदि –उदाहरणार्थ यहाँ एक गीत की लाईन प्रस्तुत है जो अलग–अलग लय में दर्शायी गयी है –

मध्य लय – तीन ताल

हम मान लेते हैं कि तीन ताल में 16 मात्राएं होती है और मध्य लय में 16 मात्राओं को बजाने में 16 सैकण्ड

	ह	र	ह	र	ह	र	ह	र	ज	य	शि	व	शं	ऽ	क	र
बोल	ज	य	ति	ज	य	ति	ज	य	र	घु	प	ति	म	न	ह	र
सैकण्ड	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ताल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
चिन्ह	X				2				0				3			

विलंबित लय – तीन ताल

अगर इसी बोल को विलंबित लय में गायेंगे तो दो मात्रा अर्थात दो सैकण्ड में एक शब्द गाया जायेगा अर्थात 2 × 16 = 32 सेकण्ड लगेंगे।

	ह	ऽ	र	ऽ	ह	ऽ	र	ऽ	ह	ऽ	र	ऽ	ह	ऽ	र	ऽ
बोल	ज	ऽ	य	ऽ	ति	ऽ	ज	ऽ	य	ऽ	ति	ऽ	ज	ऽ	य	ऽ
सैकण्ड	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
ताल	धा	–	धिं	–	धिं	–	धा	–	धा	–	धिं	–	धिं	–	धा	–
चिन्ह	X				2				0				3			

बोल	र	ऽ	घु	ऽ	प	ऽ	ति	ऽ	म	ऽ	न	ऽ	ह	ऽ	र	ऽ
सैकण्ड	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32
ताल	धा	–	तिं	–	तिं	–	ता	–	ता	–	धिं	–	धिं	–	धा	–
चिन्ह	X				2				0				3			

अति विलंबित लय में 4 सेकंड में एक स्वर गाया जायेगा अर्थात पूरी लाईन को गाने में 4 × 16 = 64 सेकंड लगेंगे। इसी प्रकार अब लय को और भी आधी कर देंगे तो एक लाइन को गाने में 8 × 16 = 128 सेकंड लगेंगे। यह हुआ मध्य लय से विलंबित लय की तरफ जाने का नियम।

अब अगर मध्य लय से दुगुन लय में जाना अर्थात गायन, वादन करना है तो 1 सेकंड में दो शब्दों को गाना बजाना होगा अर्थात पूरी लाइन को गाने में 16 के स्थान पर 8 मात्रा ही लगेगी। 16÷2 = 8 मात्रा

(दुगुन)

	हर	हर	हर	हर	जय	शिव	शंऽ	कर
बोल	जय	तिज	यति	जय	रघु	पति	मन	हर
सैकण्ड	1	2	3	4	5	6	7	8
ताल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा
चिन्ह	X				2			

अब अगर तिगुन लय करनी है तो 1 मात्रा में तीन शब्द गाने बजाने होंगे तो मध्य लय की अपेक्षा एक तिहाई समय लगेगा। पूरी लाईन को गाने में 5 सेकंड लगेगा और एक शब्द र बच जायेगा जो अगली मात्रा में जायेगा।

(तिगुन)

जयति	जयति	जयर	घुपति	मनह
धा	धिं	धिं	धा	धा
1	2	3	4	
X				2

अब अगर 1 मात्रा में 4 शब्द गाये जाये तो यह चौगुन लय हो जायेगी अर्थात 16 शब्दों को गाने में $16 \div 4 = 4$ सेकंड लगेंगे।

(चौगुन)

जयतिज	यतिजय	रघुपति	मनहर	
धा	धिं	धिं	धा	
1	2	3	4	
X				2

इसी प्रकार अठगुन लय में 1 मात्रा अथवा 1 सेकंड में 8 शब्द गाये जायेंगे तो गति अठगुन हो जायेगी और $16 \div \mathbf{8} = 2$ मात्रा में 2 सेकंड लगेंगे।

(अठगुन)

जयतिजयतिजय	रघुपतिमनहर	–	–	
धा	धिं	धिं	धा	
1	2	3	4	
X				2

दक्षिणी ताल वाद्य – मृदंगम्

घटम् वाद्य

अभ्यासार्थ प्रश्न

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) ताल को किससे नापा जा सकता है ?
(2) 'ग्रह' क्या है ?
(3) ताल में 'लय' का क्या स्थान है ?
(4) ताल की रचना किससे बनती है ?
(5) 'खाली' से क्या तात्पर्य है ?
(6) 'भरी' किसे कहते हैं ?
(7) 'सशब्द' क्रिया क्या है ?
(8) 'निशब्द' क्रिया क्या है ?
(9) 'अंग' कितने प्रकार के होते हैं ?
(10) 'ग्रह' कितने प्रकार के हैं ?

लघुत्तरात्मक प्रश्न

(1) ताल के दस प्राण कौनसे हैं ?
(2) ताल में 'खाली' 'भरी' से क्या अभिप्राय है ?
(3) ताल की जाति से क्या तात्पर्य है ?
(4) 'लय' कितने प्रकार की होती है ?
(5) 'दुगुन' 'चौगुन' लय से क्या तात्पर्य है ?

निबंधात्मक प्रश्न

(1) ताल के दस प्राणों की व्याख्या कीजिये ?
(2) 'लय' की विस्तृत व्याख्या कीजिये ?

पं. पुरुषोत्तम दास पखावज़ी